सल्तनतकालीन स्थापत्य कला		
इमारत	**शासक**	**स्थान**
कुव्वत-उल-इस्लाम मस्जिद	कुतुबुद्दीन ऐबक	दिल्ली
कुतुबमीनार	कुतुबुद्दीन ऐबक एवं इल्तुतमिश	दिल्ली
अढ़ाई दिन का झोपड़ा	कुतुबुद्दीन ऐबक	अजमेर
इल्तुतमिश का मकबरा	कुतुबुद्दीन ऐबक	दिल्ली
जामा मस्जिद	इल्तुतमिश	बदायूं
अतारकिन का दरवाजा	इल्तुतमिश	नागौर (जोधपुर)
सुल्तानगढ़ी अथवा नासिरुद्दीन का मकबरा	इल्तुतमिश	दिल्ली
लाल महल	बलबन	दिल्ली
बलबन का मकबरा	बलबन	दिल्ली
जमात खाना मस्जिद	अलाउद्दीन खिलजी	दिल्ली
अलाई दरवाजा	अलाउद्दीन खिलजी	दिल्ली
हजार सितून (स्तम्भ)	अलाउद्दीन खिलजी	दिल्ली
तुगलकाबाद	गयासुद्दीन तुगलक	दिल्ली
गयासुद्दीन तुगलक का मकबरा	गयासुद्दीन तुगलक	दिल्ली
आदिलाबाद का किला	मुहम्मद बिन तुगलक	दिल्ली
जहाँपनाह नगर	मुहम्मद बिन तुगलक	दिल्ली
शेख निजामुद्दीन औलिया	मुहम्मद बिन तुगलक	दिल्ली
फिरोजशाह का मकबरा	फिरोज तुगलक	दिल्ली
खान-ए-जहा तेलंगानी	जूनाशाह खानेजहाँ	दिल्ली
काली मस्जिद	जूनाशाह खानेजहाँ	दिल्ली
खिर्की मस्जिद	जूनाशाह खानेजहाँ	दिल्ली
बहलोल लोदी का मकबरा	लोदीकाल	दिल्ली
सिकन्दर लोदी का मकबरा	इब्राहिम लोदी	दिल्ली
मोठ की मस्जिद	सिकन्दर लोदी के प्रधानमंत्री मियाँभुवा	दिल्ली

लेखक	रचना
नुरूद्दीन मुहम्मद	लुबाब-उल-अल्बाब
अमीर खुसरो	खजाइन-उल-फुतूह, तुगलक नामा, तारीखे अलाई, किरान-उस-सादेन, मितफा-उल-फुतुह, आशिका
जिया नक्शवी	तूतीनामा
इसामी	फुतूह-अस-सलातीन
मिनहाज-उस-सिराज	तबकात-ए-नासिरी
जियाउद्दीन बरनी	तारीख-ए-फिरोज शाही तथा फतवा-ए-जहाँदारी
शम्स-ए-सिराज-अफीफ	तारीख-ए-फिरोजशाही
याहिया-बिन-अहमद सरहिन्दी	तारीख-ए-मुबारकशाही
फिरोज तुगलगक	फतूहात-ए-फिरोजशाही
जमालीकंबू (सिकंदर लोदी का दरबारी कवि)	सियर-अल-अरीफन

कुछ महत्त्वपूर्ण रचनाएँ

लेखक	रचना
विज्ञानेश्वर	मिताक्षरा (हिन्दू कानूनी ग्रंथ)
जयदेव	गीतगोविन्द
जयसिंह सुरि	हम्मीर मद मर्दन
विद्यापति	दुर्गाभक्ति तरंगिणी
जयचन्द्र (जैन विद्वान)	हम्मीर काव्य
विद्यारण्य	शंकर विजय
गंगाधर	गंगाधर प्रताप विलास
माधव	नकासुर विजय

अकबर के सैन्य अभियान एक नजर में

क्र.सं.	प्रदेश	काल	हारने वाला शासक	मुगलसेना का नेतृत्व
1.	मालवा	1561 ई.	बाजबहादुर	आधम खाँ, पीर मुहम्मद अब्दुल्ला खाँ अजबेग
2.	चुनार	1561 ई.		आसफ खाँ
3.	गोण्डवाना	1564 ई.	वीर नारायण (संरक्षिका-दुर्गावती)	आसफ खाँ
4.	राजपुताना राज्य			
	आमेर	1562 ई.	भारमल ने स्वेच्छा से अधीनता स्वीकार की।	
	मेड़ता	1562 ई.	जयमल (मेवाड़ के अधीन जागीरदार)	सरफुद्दीन
	मेवाड़	1568 ई.	उदय सिंह	अकबर स्वयं
	हल्दीघाटी युद्ध	1576 ई.	महाराणा प्रताप	आसफ खाँ, मानसिंह
	रणथम्भौर	1569 ई.	सुरजन राय हाड़ा	भगवान दास एवं अकबर

	कालिन्जर	1569 ई.	रामचन्द्र	मजनू खाँ
	मारवाड़	1570 ई.	चन्द्रसेन (मालदेव का पुत्र)	स्वेच्छा से अधीनता स्वीकार किया
	जैसलमेर	1570 ई.	हरराय	अधीनता स्वेच्छा से स्वीकृत
	बीकानेर	1570 ई.	राय कल्याणमल	स्वेच्छा से अधीनता स्वीकृत
5.	गुजरात	1571 ई.	मुजफ्फर खाँ तृतीय	खाने आजम (मिर्जा अजीज कोका)
	द्वितीय आक्रमण	1572 ई.	मिर्जा हुसैन मिर्जा द्वारा किया विद्रोह	अकबर स्वयं
6.	बंगाल एवं बिहार	1574-76 ई.	दाउद खाँ	मुनीम खाँ
7.	काबुल	1581 ई.	हकीम मिर्जा	मानसिंह एवं अकबर
8.	कश्मीर	1586 ई.	यूसूफ खाँ, याकूब खाँ	कासिम खाँ और भगवान दास
9.	सिन्ध	1591 ई.	जानी बेग	अब्दुर्रहीम खान खाना
10.	उड़ीसा	1590-91 ई.	निसार खाँ	मानसिंह
11.	ब्लूचिस्तान	1595 ई.	पन्नी अफगान	मीर मासूम
12.	कन्धार	1595 ई.	मुजफ्फर हुसैन	मुगल सूबेदार साहवेग को स्वेच्छा से किला सौप दिया
13.	**दक्षिण विजय**		**उद्देश्य**	
			1. एक अखिल भारतयी साम्राज्य की स्थापना। 2. पुर्तगालियों को समुद्र तक वापस धकेलना।	
	खानदेश	1591ई.	अली खाँ	स्वेच्छा से अधिनियम स्वीकार
	अहमद नगर	1597-1600 ई.	बहादुर निजाम शाह (चाँद बीबी संरक्षिका)	शाहजादामुराद, अब्दुरहीम खानखाना
	असीरगढ़	1601 ई.	मीर बहादुर	यह अकबर की अन्तिम विजय थी।

मुगलकालीन प्रसिद्ध महिलाएँ

1. **गुलबदन बेगम–** हुमायूँनामा की रचना की। वह अरबी और फारसी की प्रकाण्ड विदुषी थी ।
2. **माहम अनगा–** अकबर की धाय माँ माहम अनगा ने 1560-62 तक **'पर्दा - शासन'** या **'पेटीकोट सरकार'** को चलाया। इसने हुमायूँ के साथ मिलकर दिल्ली में **'मदरसा-ए-बेगम'** की स्थापना की।
3. **नूरजहाँ–** जहाँगीर की पत्नी, 'जुन्तागुट' का नेतृत्व किया, शासनकार्य में बराबर का हिस्सा लिया। इसने अनेक श्रृंगार-प्रसाधनों एवं जेवरातों में सुरुचिपूर्ण परिवर्तन किया।
4. **मुमताज महल–** शाहजहाँ की प्रिय पत्नी। यह भी श्रृंगार-प्रसाधनों और जेवरातों की बड़ी विशेषज्ञ थी।
5. **जहाँआरा–** शाहजहाँ की बड़ी पुत्री, बड़ी ही धार्मिक एवं सात्विक विचार धारा की महिला, उत्तराधिकार युद्ध में दारा का पक्ष लिया। सूफी मत के कादिरी सिलसिले से प्रभावित, शाहजहाँ के बन्दी समय में यह शाहजहाँ के साथ रही।
6. **जेबुन्निसा–** औरंगजेब की पुत्री, विद्रोही शहजादा अकबर से पत्र व्यवहार करने के कारण औरंगजेब ने 1679 में निर्वासित कर दिल्ली भेज दिया। यहीं पर उसने **'बैतुल-उल-उलूम'** नामक पुस्तकालय की स्थापना की।
7. **अस्मत बेगम–** इत्र बनाने की विधि का आविष्कार किया। यह नूरजहा की माँ थी।

तीन मुस्लिम आक्रमण एवं उनके प्रभाव

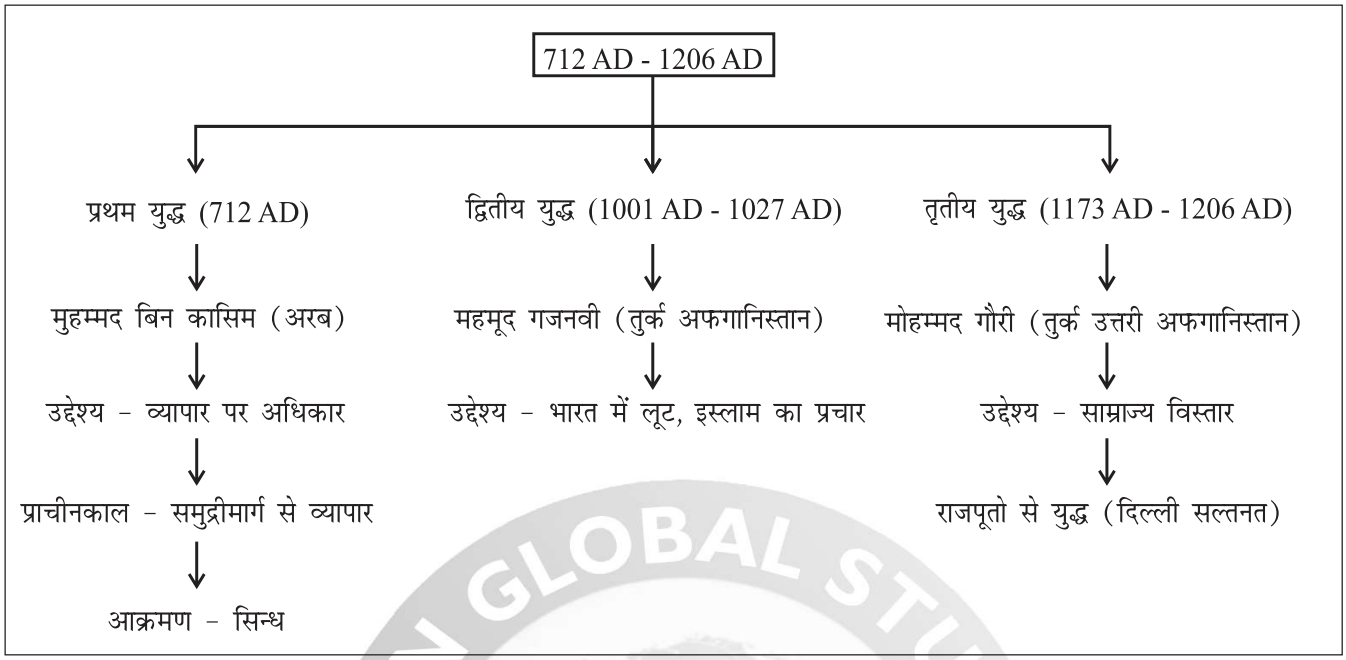

प्रथम मुस्लिम आक्रमण

- भारत और अरब के बीच प्राचीन काल से ही व्यापारिक सम्बन्ध रहे है। 7 वी सदी पूर्व इनका व्यापार भारत के पूर्वी तटो से होता था। अरबो का सातवी शताब्दी मे अचानक एक महत्वपूर्ण शक्ति के रूप में प्रकट होना और फिर भारत ही नही विश्व के अन्य देशो पर भी अधिकार कर लेना एक आश्चर्य जनक घटना है। यद्यपि वे भारत पर अपना स्थायी प्रभाव नही छोड पाये। भारत पर अरबो के आक्रमण के विषय में पर्याप्त सूचना 9 वी सदी मे लिखीत पुस्तक किताब-फुतुल-उस-बलादान से प्राप्त होती है। इस किताब के लेखक बिलादुरी थे। परंतु 1216 मे एक अन्य पुस्तक चचनामा से हमें अरबों के सिंध पर आक्रमण की सूचना प्राप्त होती है। मोहम्मद बिन कासिम अरबी आक्रमणकारी था जिसने 712 AD मे भारत पर आक्रमण किया था। मोहम्मद बिन कासिम का यह आक्रमण सिंध पर था। इस समय सिंध के शासक दाहिर थे। दाहिर एक अयोग्य शासक था। सिंध पर अरबों की विजय दाहिर की अदूरदर्शिता का परिणाम था।
- 712 AD मे सिंध के युद्ध मे मोहम्मद बिन कासिम ने दाहिर को पराजित कर दिया और सिंध पर अधिकार कर लिया। मोहम्मद बिन कासिम ने दाहिए की हत्या करके सिंघ का प्रशासन संगठित किया। कहा जाता है कि मोहम्मद बिन कासीम ने भारत के सिंध क्षेत्र मे पहली बार जजिया कर लगाया।
- जजिया एक धार्मिक कर था। जिसे गैर मुस्लमानों पर लगाया जाता था। इसके पश्चात हम अगल लगभग एक हजार वर्ष तक जजिया कर का आरोपन देखते है। (किसी न किसी क्षेत्र पर) परंतु 1720 ई. में मुगल बादशाह मोहम्मद शाह ने जजिया को भारत से अतिंम रूप से समाप्त कर दिया।
- मोहम्मद बिन कासिम ने भारत में (सिंध क्षेत्र) दिरहम् नामक सिक्का जारी किया था। भारत से अरबो ने जो ज्ञान प्राप्त किया–
  1. खगोलशास्त्र के क्षेत्र में
  2. गणित के क्षेत्र मे
  3. आयुर्वेद के क्षेत्र मे
- इस काल मे अरब विद्धवानो ने दो प्रसिद्ध भारतीय पुस्तको ब्रह्म सिद्धान्त, खण्ड-खाडय का अनुवाद अरबी भाषा में अलफजारी के द्वारा किया गया। भारत में ऊँट का पालन और खजूर की खेती का प्रारम्भ भी अरबों के आक्रमण के पश्चात ही हुआ था।

द्वितीय मुस्लिम आक्रमण

- दूसरा मुस्लिम आक्रमण कारी महमूद गजनवी था। जिसने भारत पर आक्रमण किया था कहा जाता है कि अरबों द्वारा प्रारम्भ किया गया कार्य तुर्कों द्वारा पूरा किया गया। तुर्की आक्रमण भारत के इतिहास मे एक महत्वपूर्ण घटना थी। जिन आक्रमणों ने अपने, व्यापक प्रभाव से सामाजिक, राजनैतिक, धार्मिक क्षेत्रों मे उल्लेखनीय परिवर्तनों को जन्म दिया।
- महमूद गजनवी अफगानिस्तान के यामिनी वंश से सम्बन्धित था। यामिनी वंश की स्थापना में अलप्तगीन के द्वारा की गई थी। अलप्तगीन के पश्चात सुबुक्तगीन गजनी का अगला शासक बना। सुबुक्तगीन पहला तुर्क था जिसने भारत पर आक्रमण किया था। सुबुक्तगीन ने उत्तर-पश्चिमी क्षेत्र पर आक्रमण करके शाहीवंश के शासक जयपाल को हराया था परंतु 999 AD मे महमूद गजनवी गजनी के सिंहासना पर बैठा। सिंहासन प्राप्त करते हुए उसने यह प्रतिज्ञा ली कि वह भारत पर हर वर्ष एक आक्रमण करेगा।

- ब्रिटिश इतिहासकार हेनरी इलियट के अनुसार महमूद गजनवी ने भारत पर 17 बार आक्रमण किये थे। महमूद गजनवी एक कहर मुस्लिम आक्रमणकारी थे। उन्हें मूर्तिभंजक के नाम से भी जाना जाता है। (मूर्तियों को नष्ट करने वाला)
- महमूद गजनवी ने पहली बार सुल्तान की उपाधि धारण की थी। महमूद गजनवी के प्रमुख आक्रमण थे–
  1. 1001 AD – उत्तर-पश्चिमी क्षेत्र
  2. 1006 AD – नगरकोट
  3. 1012-13 AD – थानेश्वर
  4. 1017-18 AD – कन्नौज/मथुरा
  5. 1025-26 AD – गुजरात
  6. 1027 AD – जाटो के खिलाफ
- अपने पहले अभियान मे महमूद गजनवी ने शाही वंश के शासक जयपाल को पराजित किया था। इस पराजय से अपमानित होकर जयपाल ने आत्मदाह कर लिया था। महमूद गजनवी का सबसे महत्वपूर्ण अभियान 1025-26 AD मे सोमनाथ मंदिर, गुजरात पर हुआ था। इस समय गुजरात के शासक भीम-I थे।
- इस काल मे सोमनाथ भारत में सबसे प्रसिद्ध मंदिरो मे से एक था। सोमनाथ मंदिर सबसे धनी मंदिर की श्रेणी मे आता था। सोमनाथ एवं शैव मंदिर था। जिसे चालुक्य शासको के द्वारा बनवाया गया था। कुछ इतिहासकार सोमनाथ के आक्रमण को भारत की आत्मा पर आक्रमण मानते है।
- सोमनाथ मंदिर से प्राप्त शिव की प्रतिमा को महमूद गजनवी ने तुड़वाकर गजनी की मस्जिद की सिढीयो मे चिनवा दिया। निश्चित तौर पर यह उसकी धर्मान्तता की प्रतिकाष्ठा थी। महमूद गजनवी का जाटो के खिलाफ अंतिम आंदोलन 1027 AD में हुआ था। यह एक असफल आंदोलन था। महमूद गजनवी की मृत्यु 1030 AD मे हो गई। भारत पर उसके आक्रमण के उद्देश्य थे–
  1. धन की लूट
  2. इस्लाम का प्रसार
- महमूद गजनवी ने साहित्य को भी संरक्षण दिया था कई प्रमुख विद्वान उसके दरबार मे रहते थे–
  1. अलबरूनी – किताब-उल-हिंद (किताब)
  2. फिरदौसी – शाहनामा (किताब)
  3. उत्सी – महानकवि (किताब)

चौहान वंश (7th Century AD - 1192 AD)

- ऐसा माना जाता है कि 7वी शताब्दी AD में वासुदेव नामक शासक ने अजमेर के निकट शाकम्बरी मे इस वंश की स्थापना की थी। राजपूतो का प्रारम्भिक इतिहास हमें दो प्रसिद्ध अभिलेखों से प्राप्त होता है।
  1. हर्ष अभिलेख - जयपुर (विग्रहराज)
  2. विजौलिया अभिलेख - राजस्थान (सोमेश्वर)
- इस वंश के प्रारम्भिक राजा प्रतिहारो के सामंत थे। 20वीं शताब्दी के प्रारम्भ मे वाक्पति-I ने अपने आप को स्वतंत्र शासक के रूप मे घोषित कर दिया। इसके पश्चात् वाक्पतिराज का पुत्र सिद्धराज राजा बना। लेकिन सिद्धराज ने चौहान वंश को विस्तारित किया और एक उपाधि - महाराजाधिराज धारण कर ली। सिद्धराज की मृत्यु के पश्चात् विग्रहराज सिंहासन पर बैठा । विग्रहराज-II के विषय में जानकारी हमे हर्ष अभिलेख से प्राप्त होती है। विग्रहराज ने भी साम्राज्य का विस्तार किया और गुजरात के कक्ष में एक भव्य मंदिर आशापुरी मंदिर का निर्माण करवाया। आशापुरी गुजरात का प्रसिद्ध मंदिर है।
- विग्रहराज-II ने संस्कृति वितरण को भी संरक्षण दिया। कुछ कमजोर शासको के बाद 12वीं सदी मे अजयराज सिंहासन पर बैठा। अजयराज ने अजमेर नगर की स्थापना की और इसे अपनी राजधानी के रूप मे घोषित किया था। अजयराज के पश्चात् अर्णोराज चौहानों के अगले शासक बने। अर्णोराज ने 1130-1150 AD के मध्य शासन किया था। अर्णोराज ने अजमेर के समीप तुर्कों को पराजित कर दिया था। अर्णोराज के पुत्र और उत्तराधिकारी बीसलदेव थे।
- जिन्होंने 1153-63 AD के मध्य शासन किया था। बीसलदेव को विग्रहराज-IV कहा जाता है। बीसलदेव इस वंश के महानतम शासक थे।
- बीसलदेव के शासनकाल मे साम्राज्य का विस्तार चरमोत्कर्ष पर पहुँचा था। बीसलदेव के काल में सामंतो के रूप मे तोमर पुनः अस्तित्व में आये। बीसलदेव एक महान लेखक के रूप में भी जाने जाते है। बीसलदेव ने हरिकेल नामक प्रसिद्ध ग्रंथ लिखा था। हरिकेल ग्रंथ के कुछ अंश अजमेर स्थित अढाई दिन का झोपड़ा नामक मस्जिद की दिवारों पर भी अंकित किये गये हैं।
- बीसलदेव की मृत्यु के पश्चात् इस वंश का एक अन्य महान शासक पृथ्वीराज चौहान सिहांसन पर बैठा। पृथ्वीराज चौहान पृथ्वीराज-II थे। इनके पिता का नाम सोमेश्वर था। पृथ्वीराज चौहान, जयचन्द्र (गहड़वाल शासक) के समकालीन थे। पृथ्वीराज चौहान ने साम्राज विस्तार उत्तर भारत मे पंजाब तक किया था। 1178 AD में चंदेल शासक परमर्दिदेव के साथ इनका युद्ध हुआ था। इस युद्ध मे दो महान योद्धा आल्हा एवं उदल ने महत्त्वपूर्ण भूमिका निभायी थी।
- पृथ्वीराज चौहान को रायपिथौरा के नाम से भी जाना जाता है। परंतु पृथ्वीराज चौहान को भारत मे मोहम्मद गौरी से हुए तराईन के युद्धो के लिए याद किया जाता है। इन्होने मोहम्मद गौरी के साथ दो प्रसिद्ध तराईन युद्ध लड़े थे।

1. **तराईन का प्रथम युद्ध (1191AD)**– इस युद्ध मे पृथ्वीराज चौहान ने मोहम्मद गौरी को पराजित कर दिया परंतु इस युद्ध के बाद पृथ्वीराज की इतिहासिक भूल यह थी कि उन्होने मोहम्मद गौरी को जीवित छोड़ दिया। एक वर्ष पश्चात 1192 AD में दोनों के बीच तराईन का दूसरा प्रमुख युद्ध लड़ा गया इस युद्ध मे पृथ्वीराज चौहान की हार हुई थी। इस युद्ध के बाद मोहम्मद गोरी ने पृथ्वीराज चौहान की हत्या कर दी और इनके पुत्र गोविन्द्र चौहान को शासक घोषित कर दिया। कहा जाता है कि गोविन्द चौहान के काल मे एक बड़ा विद्रोह फैल गया इस विद्रोह के बाद कुतुबुद्दीन ऐबक ने चौहान वंश को समाप्त करके उत्तर भारत पर अधिकार कर लिया। पृथ्वीराज चौहान ने दो प्रसिद्ध लेखकों को भी संरक्षण दिया था–

1. चंद्रवरदायी - पृथ्वीराजरासो
2. जयानक - पृथ्वीराज विजय

गहड़वाल वंश

- ऐसा माना जाता है कि प्रतिहार वंश के पतन के साथ ही कई राजपूत राज्य उत्तर भारत मे अस्तित्व मे आए। इनमें से सबसे महत्वपूर्ण राजवंश थे–
  1. कन्नौज के गहड़वाल
  2. अजमेर के चौहान
  3. मालवा के परमार
- परंतु इसके साथ ही हम उत्तर और मध्य भारत में कुछ अन्य छोटे राजवंशों को भी देखते है। उदाहरण– बुन्देलखण्ड के चंदेल, गुजरात के चालुक्य तथा दिल्ली के तोमर।
- गहड़वाल वंश 11वीं सदी में उत्तर भातर के प्रमुख राजवंश के रूप में उभरा। कुछ इतिहासविदों के अनुसार गहड़वालों का उद्भव स्थल विंध्याचल पर्वतीय क्षेत्र में माना जाता है।
- 1080 से 1085 के मध्य चंद्रदेव ने गहड़वाल वंश की स्थापना की। चंद्रदेव ने गहड़वालों के साम्राज्य विस्तार के लिए प्रयास के क्रम में दिल्ली के तोमरों को पराजित किया था।
- चंद्रदेव की मृत्यु के बाद उनका पुत्र मदनपाल (1104 से 1114 AD) सिंहासन पर बैठा। परंतु मदनपाल के शासनकाल में तुर्कों का आक्रमण कन्नौज पर हुआ।
- इस अभियान के अंतर्गत तुर्कों ने मदनपाल को पराजित करके कैद कर लिया। कुछ समय के लिए गहड़वालों की प्रभुसत्ता को ठेस पहुँचा परंतु मदनपाल का पुत्र और उत्तराधिकारी गोविन्दचन्द्र इस दौर में एक योद्ध के रूप में उभरकर सामने आया।
- गोविन्दचन्द्र ने न केवल तुर्कों को पराजित किया बल्कि अपने पिता को भी स्वतंत्र कराया।
- **गोविन्दचन्द्र (114-1155 AD)–** ये इस वंश के महानतम शासक थे। इनके दौर में गहड़वालों का साम्राज्य विस्तार चर्मोत्कर्स पर पहुँचा।
- गोविन्दचन्द्र ने अपने साम्राज्य का विस्तार पश्चिमी उत्तर प्रदेश से पश्चिमी बिहार के क्षेत्रों तक किया था।
- गोविन्दचन्द्र ने पाल वंश से मगध को जीत लिया था।
- गोविन्दचन्द्र ने मालवा को भी जीत लिया था।
- गोविन्दचन्द्र एक बुद्धजीवि या विद्वान शासक के तौर पर भी याद किए जाते हैं।
- गोविन्दचन्द्र को ''विविध, विद्या विचार वाचस्पति'' के नाम से भी जाना जाता है।
- इसके प्रमुख मंत्री लक्ष्मीधर थे। लक्ष्मीधर इस काल के सबसे प्रसिद्ध विद्वान मंत्रियों में से एक थे।
- लक्ष्मीधर ने एक प्रमुख ग्रंथ 'कृत्यकल्पतरू' की रचना की थी।
- यह ग्रंथ इस काल की राजनीति, समाज और संस्कृति पर आधारित था।
- गोविन्दचन्द्र की मृत्यु 115 AD में हो गई। इसकी मृत्यु के पश्चात् इनका पुत्र विजयचन्द्र कन्नौज के सिंहासन पर विराजमान हुआ।
- **विजयचन्द्र (1155 - 1170 AD)–** विजयचन्द्र के शासनकाल में हम इस वंश की कुछ अवनति देखते हैं।
- इन्होंने इस वंश के शासक लक्ष्मणसेन के आक्रमण का सामना किया था।
- इसके शासनकाल में दिल्ली चौहानों के अधीन हो गई।
- इनका शासनकाल गहड़वालों की शांति और सम्पन्नता की कमी को प्रदर्शित करता है।
- **जयचन्द्र (1170 - 1194 AD)–** विजयचन्द्र के पुत्र और उत्तराधिकारी थे।
- जयचन्द्र इस वंश के अंतिम शक्तिशाली शासक थे।
- ये पृथ्वीराज चौहान के समकालीन थे।
- पृथ्वीराज रासो के अनुसार–पृथ्वीराज चौहान व जयचन्द्र के बीच विवाद का मुख्य कारण गहड़वाल राजकुमारी संयोगिता से पृथ्वीराज का प्रेम संबंध था।
- जयचन्द्र ने कुछ महत्वपूर्ण विजय भी की थी–
  1. तुर्कों को हराया।
  2. गुजरात के सोलंकी को हराया।
  3. देवगिरी के यादवों को हरया।
- जयचन्द्र ने एक राजसूय यज्ञ का भी आयोजन किया था।
- चन्दवरदाई के अनुसार इन्होंने मोहम्मद गौरी को पृथ्वीराज चौहान के खिलाफ समर्थन किया था।
- जयचन्द्र ने अपने साम्राज्य को पूर्वी भारत में विस्तारित करना चाहा परंतु इसी विस्तार के दौरान ये लक्ष्मणसेन द्वारा पराजित हुए।
- इन्होंने कला और साहित्य को भी संरक्षण दिया था।
- 'श्री हर्ष' नामक कवि इसके दरबार में रहता था। श्री हर्ष ने दो प्रसिद्ध ग्रंथ लिखे थे–
  1. नैषधचरित्र
  2. खण्ड़खाड्य
- इस समय प्रसिद्ध तुर्क आक्रमणकारी मोहम्मद गौरी के आक्रमणों का दौर भारत में जारी था।
- उल्लेखनीय है कि मोहम्मद गौरी उत्तर भारत में तुर्क साम्राजय को विस्तार चाहता था जो जयचन्द्र और पृथ्वीराज चौहान की पराजय के बिना संभव नहीं था।
- 1194 में जयचन्द्र और मोहम्मद गौरी के मध्य प्रसिद्ध चन्दावर का युद्ध लड़ा गया था। इय युद्ध में मोहम्मद गौरी ने चयचन्द्र को पराजित करके उसी हत्या कर दी और कन्नौज पर अधिकार कर लिया।

❑❑❑